[Shri Dipen Ghosh] over the papers to him immediately. There is an attempt to doctor the post-mortem report and to influence the forensic report also. It is a serious charge made by her relatives, her colleagues and the association. Mr. Arif Mohammad Khan, Minister of 2ivll Aviation, should take up the matter immediately with the Delhi Police authoritits and also the Civil Aviation authorities so that the inquiry is not hushed up and the real culprit is taken to task.

SKRIMATI JAYANTHI NATARAJAN (Tamil Nadu); Madam, I want to associate myself with this Special Mention and request the Minister to look into it. Every time this happens with some woman, immediately they say that she was having an affair or that she had a had character. This is. the kind of way these atrocities <get suppressed. Therefore, I would also like to join Mr. Dipen Ghosh in calling upon the Minister of Civil Aviation to look into the matter in great detail and see that justice is done.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Look into -the matter, Mr. Minister.

THE MINISTER OF ENERGY WITH ADDITIONAL CHARGE OF THE MINISTRY OF CIVIL AVIATION (SHRI ARIF MOHD. KHAN); Madam I will take it up with my colleague, the Home Minister. There is no. question of allowing anybody to hush up the matter. ..

1. 00 P. M.

I. RESOLUTION SEEKING APPROVAL OF PRESIDENT'S PROCLAMATION UNDER ARTICLE 356 IN RELATION TO JAMMU & KASHMIR,

II. STATUTORY RESOLUTION SEEKING DISAPPROVAL OF ABMED FORCES (JAMMU & KASHMIR) SPECIAL POWERS ORDINANCE, 1990; AND

THE ARMED FORCES (JAMMU & KASHMR) SPECIAL POWERS BILL, 1990^-Contd.

THE DEPUTY CHAIRMAN; Now, ' we will take up further discussion on the Statutory Resolutions and the Armed Forces (Jammui and Kashmir) Special Powers Bill^....

AN HON. MEMBERS: Where is the, ' Minister?

THE DEPUTY CHAIRMAN: He is not here. Mr. Arif Mohd. Khan; will be in his place taking the notes. Shri S. S. Ahluwalia to continue.. ...

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया (बिहार) : उपसभापति जी, मैं जम्मू और कश्मीर की आर्म्ड फ़ोर्सेज को स्पेशल पावर देने के लिए जो आर्डिनेंस लाया गया है, उसके विरोध में खड़ा हुआ हूं और मैं जरा याद दिलाना चाहता हूं इस सरकार की कमिटमेंट जो आठ महीने पहले यही सरकार जगह-जगह अपनी बात बड़े जोर पुरजोर से रखती थी ।

मैं तो चाहता था कि इस वक्त मुफ्ती मोहम्मद सईद साहब उपस्थित रहते, तो कम से कम अपने कारनामों को भी जानते, जिसके कारण आज कश्मीर जल रहा है । पर मेरा दुर्भाग्य है और मेरे दुर्भाग्य के साथ-साथ इस मुल्क का भी दुर्भाग्य है कि उन्हें इस बहस को सुनने के लिए भी मौका नहीं है ।

महोदया, यह सरकार वह सरकार है जिसने अपने मेनिफ़ेस्टो के माध्यम से सिविल लिबर्टीज की बात की थी और कहा था कि :—

"Under-trials shall. be-safeguard., ed from harassment, institutions of. Executive Magistrates wherever they exist shall be dispensed, with. The UN Convention against, torture and those relating to. prisoners and refugees shall be ratified -and adopted. Suitable prison reforms will be undertaken on a ' systematic basis. "

यह वही सरकार है जिसने ह्यूमन, राईटस की बात कही थी और, महोदया अफ़सोस तो उस वक्त आता है जब मैं कश्मीर के अन्दर सुन्दर घाटियों और वादियों की बात सोचता हूं और समझता हूं कि वहां एक तरफ़ अलगाववादी ताकतें अपनी आवाज बुलंद कर रही हैं। किन्तु जिन पर भरोसा है उन अलगाववादी ताकतों से कोई उनकी रक्षा कर सकता है, तो वह हिंदुस्तान की फ़ौजी वर्दियां पहने हुए सैनिक या अर्ध-सैनिक फ़ौजी वर्दियों में आकर उनकी रक्षा करेंगे। पर आज वह वर्दियां भी कलंकित हो रही हैं और उन वर्दियों में आए हुए वह सैनिक ऐसी वहशत उन पर दिखा रहे हैं—लोग एक तरफ़ अलगावादी ताकतों से आतंकित हैं, परेशान हैं और तकलीफ़ भोग रहे हैं और दूसरी तरफ़ जब वह किसी मदद के लिए उनके पास जाते हैं, तो उनका हर तरह से शोषण होता है।

मैं आपके माध्यम से सदन को याद दिलाना चाहता हूं कि पंचगांव एक छोटा सा गांव है, जिला कुलगाम में, जहां की आबादी बड़ी छोटी है, पांच हजार की आबादी है और यहां पांच साल पहले जम्मू एंड कश्मीर लाईट इनफ़ट्री का एक पूरा डिवीजन आया था और अस्सी एकड़ जमीन खरीदी गई थी। पर 28 मई, 1990 तक वहां के लोगों को यह पता नहीं था कि इस अस्सी एकड़ जमीन पर कौन रहते हैं। उनको यह पता था कि इस अस्सी एकड़ जमीन पर हमारे देश के सैनिक रहते हैं, हमारे देश के वह सैनिक जो हमारे देश की सुरक्षा, एकता और अखंडता के लिए मर मिटने के लिए तैयार हैं, और हमारे देश की सुरक्षा, एकता और अखंडता को काबिल रखते हैं।

पर उन वर्दियों में कुछ वहशी भी हैं, यह उन्हें पता नहीं था। जो उनके साथ 28 मई, 1990 के बाद जो घटना घटी है, उसके बाद वह इतने आतंकित हैं, इतने परेशान हैं कि उसको अपनी भाषा में बयान नहीं किया जा सकता।

मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं, जो सरकार ह्यूमन राईटस की बात करती है, वह सरकार जो बड़े-बड़े भाषणों में, चाहे वह लाल किले का मैदान हो, चाहे वह राम लीला मैदान हो और चाहे वह पटना का गांधी मैदान हो, इसी सरकार के प्रधान मंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, राजा विश्व नाथ प्रताप सिंह—उन्होंने अपने भाषणों में यह बातें कही हैं, पर उनकी सुरक्षा नहीं कर सकते।

महोदया, यह घटना 29 मई की है। तीसरे पहर कुछ किसान खेतों की ओर जा रहे थे। जवानों ने उनमें से चार को पकड़ कर पेड़ों पर उल्टा लटका दिया और घंटों तक उनको उल्टा लटका कर रखा और जब वह जवान अब्दुल गणी धर की बीस वर्षीय पत्नी रहमती के घर में घुसे, तो उन्होंने उनकी तलाशी ली और उसको कहा कि तुम मेरे साथ चलो, हम इसकी तलाशी लेते हैं। फ़िर उसके आदमी को भी बाहर दरख्त के साथ बांधकर उल्टा लटका दिया और अन्दर पहुंचकर जो काश्मीरी महिलाएं फ़िरन पहनती हैं, उससे कहा कि यह फ़िरन उठाओ। फ़िरन उठाने का मतलब है कि तुम नग्न हो, तुम नंगी हो, तुम निर्वस्त्र हो और उसके जबर्दस्ती करके, उसके सीने पर बंदूक रख कर उस पर चढ़ बैठे। वह चार महीने की गर्भवती महिला थी और उसके साथ अत्याचार किया। उसके साथ परेशानी की गई और उसके जिस्म के साथ हर तरह के खिल-वाड़ किए इन जवानों ने, महोदया, शर्म आती है। यह मई की घटना है। उसके बाद आज जबकि उनके पास यह पावर नहीं थी, आज हम उसको यही पावर देने जा रहे हैं कि आप ऐसा करें, इसको लीगलाइज करने जा रहे हैं। महोदया, उसके बाद शमीमा पत्नी अली मोहम्मद मिर्जा उर्फ़ खान के घर में दो सैनिक पहुंचे। खान को पकड़ कर गांव की एक दुकान के सामने पेड़ से बांध दिया। फिर चार जवान वापस आए। दो जवान घर के बाहर रुके और दो तलाशी के बहाने

[श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया]

शमीमा को घर के अन्दर ले गए । अन्दर पहुंचते ही एक जवान ने शमीमा को जमीन पर गिरा दिया और उसके सीने पर बंदूक अड़ा दिया । दूसरा उसके साथ छेड़-छाड़ करने लगा । शमीमा ने विरोध किया और चीख पड़ी । जवानों ने शमीमा को कमरे के अन्दर जाने और अलमारी खोलने के लिए मजबूर किया । इससे पहले कि वह अलमारी खोले उसे गिरा दिया गया । किसी पड़ोसी का दस साल का लड़का वहां सो रहा था । जवानों ने उसे उठा कर बाहर फेंक दिया । जवानों ने शमीमा की सलवार फाड़ दी । उसके मुंह में रूमाल ठूंस दिया ताकि वह चीख न सके और उसके बाद शमीमा के साथ बलात्कार किया गया । इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है कि वर्दी पहन कर जवान बिना किसी ताकत के, बिना किसी वारंट के किसी एक कश्मीरी के घर में घुस कर उसकी इस तरह बेइज्जती करें और उसकी महिला, उसकी पत्नी, उसकी बहन, उसकी मां के साथ उसकी अस्मत लेंगे, इज्जत लूटें और हम मूक-दर्शक बन कर इस संसद के अन्दर ऐसे बिल को पास करते हुए देखते रहें ? इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है ? महोदया, इसके बाद जब वह बेहोश हो गई, जब लगातार क्रमवार लोग उसके साथ बलात्कार करते रहे तो वह बेहोश हो गई और वह तब तक बेहोश रही जब तक कि उसका पति जिसे कि पेड़ के साथ उल्टा टांग रखा था और जब आर्मी चली गई तो लोगों ने उसे उतारा और उसके बाद वह जब घर आया तो उसने देखा उसकी पत्नी तब तक बेहोश थी । महोदया, इसके बाद और भी शर्म की बात यह है कि कानून में ऐसे अधिकार हम दे रहे हैं कि साहब, बिना वारंट के ही आप किसी को जा कर पकड़ सकते हैं । यह वाकया 11 जून, 1990 का है । उस दिन लोग वर्ल्ड कप फुटबाल मैच टेलीविजन पर देख रहे थे। वह मैच देखते-देखते रात को पता नहीं किसने गोली चलाई । उसके बाद फौजी वहां पहुंचे और उन्होंने सबको कहा कि घर से बाहर निकलो । जो-जो आदमी हैं, वे सब घर से बाहर निकलो और सड़क पर खड़े हो जाओ। उन लोगों को सड़क पर खड़ा कर दिया गया। महोदया एक परिवार गुलाम रसूल मलिक का था जिसके चार बेटे हैं और दुर्भाग्य से उसके चारों बेटे नेत्रहीन हैं, वह उनकी आवाज सुन कर घर से बाहर नहीं निकल सके। जब जवान उनके घर में दाखिल हुए तो अब्दुल मजीद हनीफ़ 20 साल, बाबा 22 साल, गुलाम मुस्तफा बाबा 24 साल और गुलाम मोहीदीन के घर में देख कर उनका पारा और चढ़ गया और जवानों ने बंदूकों के कुंदों से उन सबकी जम कर पिटाई की। एक जवान ने अब्दुल मजीद की आंख में बंदूक की नाल गाड़ते हुए कहा कि यह पाकिस्तानी एजेंट है और अंधा होने का अभिनय कर रहा है । महोदया, इससे ज्यादा शर्म की बात और क्या हो सकती है कि एक हिन्दुस्तानी को जबर्दस्ती पाकिस्तानी एजेंट बनाया जाता है । इस गांव के लोगों ने मजबूर होकर कहा कि आज तक हमें नहीं पता था कि अल-गावबाद क्या होता है, मिलिटेंट कौन है, पर आज से इस अत्याचार के बाद हमारा सारा का सारा गांव मिलिटेंट है, क्योंकि हम हिन्दुस्तानी हैं और हमें बंदूक के जोर पर आप हिन्दुस्तानी से पाकिस्तानी बना रहे हैं । हमें जबर्दस्ती कहा जा रहा है कि पाकिस्तानी बनो। महोदया, जवानों ने अब्दुल अहमद मलिक के घर में घुसकर 6 माह की गर्भवती 18 वर्षीय बहिन को जमकर पीटा और सोमबाला वीरा की 15 वर्षीय पुत्री है, चार-पांच जवान उसके कमरे में दाखिल हुए । उन्होंने सदा का हाथ मरोड़ा और उसका झोंटा पकड़ा । एक जवान ने उसके मुंह के करीब बंदूक सटा दी और कहा कि बता गोली किसने चलायी थी ? जब सदा ने अनभिज्ञता जाहिर की तो उन्हें पीटा गया। वह चीख पड़ी । उनकी मां ने उसे जवानों के चंगुल से छुड़ाया तो तीन जवानों ने समीना को पकड़ लिया । उसको बेलिबास होने को

कहा । समीना ने उसका विरोध किया तो उसके सीने पर बंदूक तान दी गयी और समीना के साथ एक-एक बार क्रमवार बलात्कार किया गया । उसके बाद.... (व्यवधान)....

श्री शमीम हाशमी (बिहार) : मुफ्ती साहब कहां हैं?

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया : मैं चाहता था कि मुफ्ती साहब रहते ।

SHRJ SHABBIR AHAMAD SALARIA (Jammu and Kashmir); Neither the Home Minister nor the Minister of State for Home Affairs, nor the Leader of the House is present in the House.

THE DEPUTY CHAIRMAN; The Minister of State for Home Affairs has gone for a meeting. He requested me that till he is not there Mr. Arif Mohd. Khan will take the notes.

डा० अबरार अहमद खान ((राजस्थान) : महोदया, बड़ा महत्वपूर्ण बिल है, लेकिन उसमें गृह मंत्रालय से संबंधित दोनो मंत्रियों में से कोई भी मंत्री नहीं हैं... (व्यवधान)... वह भी बहुत महत्वपूर्ण है । अगर दूसरे काम महत्वपूर्ण हैं, तो यह भी उससे कम महत्वपूर्ण नहीं हैं... (व्यवधान)....यह इस सदन का भी अपमान है कि इस सदन के अंदर गृह मंत्रालय से संबंधित एक बिल चल रहा है, यह इतना महत्वपूर्ण बिल है जिससे एक कानूनी अधिकार मिलने वाला है.... (व्यवधान)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: He will take the notes.

SHRI SHABBIR AHMAD SALA. RIA: Mr. Arif Mohd. Khan is not aware of the details of the Home Ministry. It is for the Home Minister to take notes. You will kindly realise the importance of the matter.

THE DEPUTY CHAIRMAN; Your sentiments have been conveyed. I J will ask the Minister for Parliamentary Affairs to inform the Home Minister and the Minister of State for Home Affairs to *come.*

SHRi GHULAM NABI AZAD (Maharashtra); Madam, we have all respect for Mr. Arif Mohd. Khan, but this is a very important Bill which is being discussed in this House.

SHRI SHABBIR AHMAD SALARIA; This is not a matter to be taken so lightly.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Message has gone. He has sent the message. I will also request the Secretariat to inform the Minister of State for Home Affairs to be here.

श्री हरवेन्द्रसिंह हंसपाल (पंजाब) : मैडम, पार्लियामेंटरी अफेअर्स मिनिस्टर भी तो नहीं हैं, यहां पर, आपने किससे कह दिया ?

उपसभापति : उन्होंने कहा है ।

ऊर्जा मंत्री साथ में नागर विमानन मंत्रालय का अतिरिक्त प्रभार (श्री आरिफ मोहम्मद खान) : मैंने भेज दिया है ।

THE DEPUTY CHAIRMAN: My Rajya Sabha Secretariat will also do that.

श्री शमीम हाशमी : काश्मीर का चार्ज आरिफ साहब आप ले लीजिए । इससे गरीब तो बच । मुफ्ती साहब से तो वह भी नहीं हो रहा है ।

(व्यवधान)

डा० अबरार अहमद खान : आजाद साहब जो आपको बताएंगे, उसको सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि वहां क्या हो रहा है।....(व्यवधान)....यह अगौर करने वाली बात है । वहां लोगों की इज्जत से खेला जा रहा है.... (व्यवधान)....